Be Hisaab Magfirat Ke Aamal (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 428
Weekly Booklet : 428

बे ह़िसाब मग़्फ़िरत के आमाल (क़िस्त़ : 1)

(सफ़ह़ात : 17)

हर हज़ार के साथ 70 हज़ार जन्नती 03
कामयाब ताजिर 09
नाबीनाओं के लिये ख़ुशख़बरी 12
त़ालिबे इ़ल्म और फ़रमांबरदार बीवी 15

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

बे ह़िसाब मग़्फ़िरत के आमाल (क़िस्त़ : 1)

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला **"बे ह़िसाब मग़्फ़िरत के आमाल** (क़िस्त़ : 1)" पढ़ या सुन ले उसे ऐसे आमाल की तौफ़ीक़ दे कि वोह ईमान पर फ़ौत हो और मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ा जाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(مُعجَم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

उ़क्काशा सबक़त ले गए

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا बयान करते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : मुझ पर मुख़्तलिफ़ उम्मतें पेश की गईं, तो कोई नबी यूं गुज़रे कि उन के साथ फ़क़त़ एक ही शख़्स था, किसी नबी के साथ दो अफ़राद, किसी नबी के साथ एक जमाअ़त थी और किसी नबी के साथ एक भी नहीं था फिर मैं ने बहुत बड़ा मज्मअ़ (CROWD) देखा जिस ने ज़मीन के किनारों को भर दिया, मुझे उम्मीद हुई कि येह मेरी उम्मत है। मुझ से कहा गया कि येह ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام और उन की क़ौम है, फिर मुझ से कहा गया : देखिये ! चुनान्चे मैं ने बहुत बड़ा

मज्मअ़ देखा जिस ने ज़मीन के किनारों को भर दिया था। मुझ से दोबारा कह गया : (इस त़रफ़) देखें (उस त़रफ़) देखें, मैं ने (इधर उधर) देखा तो बहुत बड़ा मज्मअ़ था जिस ने ज़मीन के किनारों को भर दिया था, फिर मुझ से कहा गया कि येह आप की उम्मत है और "उन के साथ 70 हज़ार और भी हैं जो बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल होंगे।" येह सुन कर (सह़ाबिये रसूल) ह़ज़रते उ़क्काशा बिन मिह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं भी उन लोगों (बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल होने वालों) में से हूं तो **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें इरशाद फ़रमाने वाले प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ! फिर एक दूसरे शख़्स ने अ़र्ज़ की : क्या मैं भी उन लोगों में से हूं ? इरशाद फ़रमाया : उ़क्काशा तुम से सबक़त ले गए। (بخاری،4/35،حدیث:5752)

बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब

पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नस्ल दर नस्ल बिला ह़िसाब जन्नत में

ह़ज़रते सहल बिन सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि मैं ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : बेशक मेरे सह़ाबा की नस्ल दर नस्ल में ऐसे मर्दो औ़रतें होंगे जो बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल होंगे, फिर आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत की : ﴿وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ﴾ (پ28،الجمعۃ:3) तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और उन से (बाद वाले) दूसरे लोगों को (भी येह रसूल पाक करते और इ़ल्म देते हैं) जो उन (मौजूदा लोगों) से अभी नहीं मिले।

(معجم کبیر،6/201،حدیث:6005)

हर सहाबिये नबी जन्नती जन्नती
सब सहाबिय्यात भी जन्नती जन्नती

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तू बख़्श बे हिसाब

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि मैं ने **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : मेरे रब्बे करीम ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि वोह मेरी उम्मत में से 70 हज़ार अफ़राद को बिला हिसाब और बिला अ़ज़ाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, उन में से हर हज़ार के साथ 70 हज़ार और होंगे और मेरे रब्बे करीम की मुठ्ठियों में से (जैसा कि उस की शान के लाइक़ है) तीन मुठ्ठियां (मज़ीद होंगी)। (ترمذی،4/198،حدیث:2445)

शर्हे ह़दीस : पहले सत्तर हज़ार तो वोह थे जो अपने नेक आमाल की वज्ह से बे हिसाब जन्नती हुए और दूसरे सत्तर हज़ार वोह हैं जो उन पहलों की तुफ़ैल, उन की ख़िदमत, उन के क़ुर्ब की वज्ह से बे हिसाब जन्नत में गए। गुलदस्ता में फूलों के साथ घास बन्ध जाती है तो वोह भी इ़ज़्ज़त पा जाती है यानी उन में से हर एक के साथ बेशुमार लोग होंगे जो उन के तुफ़ैल बख़्शे जाएंगे। लप से मुराद है बे अन्दाज़ा क्यूंकि जब किसी को बग़ैर गिने बग़ैर तोले नापे देना होता है तो वहां लप भर भर कर देते हैं या कहो कि येह ह़दीस मुतशाबिहात में से है वरना रब तआ़ला मुठ्ठी और लप से पाक है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/392,393)

मुझे बख़्श दे बे सबब या इलाही न करना कभी भी ग़ज़ब या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 111)

हर हज़ार के साथ 70 हज़ार जन्नती

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक मेरे रब्बे करीम ने मुझ से मेरी उम्मत के बारे में मेरी राय त़लब फ़रमाई कि मैं उन के साथ क्या करूं ? मैं

ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तू जो चाहे कर क्यूंकि वोह तेरी मख़्लूक़ और तेरे बन्दे हैं। **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुह़म्मद ! हम तुम्हें तुम्हारी उम्मत के मुआ़मले में ग़मगीन नहीं करेंगे।" और **अल्लाह** करीम ने मुझे ख़ुशख़बरी दी कि सब से पहले मेरी उम्मत में से 70 हज़ार जन्नत में दाख़िल होंगे और उन में से हर हज़ार के साथ 70 हज़ार मज़ीद होंगे, उन सब पर कोई ह़िसाबो किताब न होगा।

(مسند احمد، 9/94، حدیث:23396)

एक और रिवायत में है : बेशक मैं उम्मीद करता हूं वोह लोग उस वक़्त तक दाख़िले जन्नत न हो सकेंगे जब तक तुम और तुम्हारी नेकूकार औलाद और बीवियां जन्नत में अपना ठिकाना न बना लें। (مسند احمد، 5/479، حدیث:16215ملتقطاً)

4 अरब नव्वे करोड़

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होंगे और उन के तुफ़ैल में हर एक के साथ सत्तर हज़ार और रब उन के साथ तीन जमाअ़तें और देगा, मालूम नहीं हर जमाअ़त में कितने होंगे, इस का शुमार वोही जाने।

(مسند امام احمد، 1/419، حدیث:1706۔ ترمذی، 4/198، حدیث:2445)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस के फ़ज़्लो करम पे क़ुरबान कि उस ने अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में हम ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा को कितनी सआ़दतों से नवाज़ा है। ऐ काश ! हमारा शुमार भी उन ख़ुश नसीब बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में जाने वालों में हो जाए क्यूंकि अपने पास तो नेकी के "ن" का नुक़्ता भी नहीं है, **अल्लाह** पाक करम फ़रमा दे तो हम गुनहगारों की बख़्शिश का सामान हो जाएगा। हम उम्मते मुस्त़फ़ा में पैदा होने पर उस का शुक्र अदा करते हैं कि जो **अल्लाह** पाक

की नेमतों का शुक्र अदा करता है **अल्लाह** पाक उसे अपनी नेमतों से मज़ीद नवाज़ता है।

शुक्र अदा हो क्यूंकर तेरा प्यारे नबी की उम्मत में
मुझ से निकम्मे को भी पैदा तू ने ऐ रह़मान किया

(वसाइले बख़्शिश, स. 196)

अच्छा गुमान अच्छा फल

अल्लाह पाक से हम अच्छा गुमान रखते हैं कि वोह फ़क़त़ अपने फ़ज़्लो करम से हमें ज़रूर बिला ह़िसाबो किताब बख़्शेगा। क्यूंकि ह़दीसे क़ुदसी में **अल्लाह** पाक ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : "اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِی بِیْ" तर्जमा : मैं अपने बन्दे के गुमान के (मुत़ाबिक़ उस के साथ मुआमला फ़रमाता हूं) साथ हूं। (بخاری، 4/574، حدیث:7505) यानी **अल्लाह** पाक के बारे में जो जैसा गुमान रखेगा **अल्लाह** पाक उस के साथ वैसा ही मुआमला फ़रमाएगा। हम उस की ज़ाते पाक से उम्मीद करते हैं कि वोह अपने मह़बूबे करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़ुफ़ैल ज़रूर हमें अपनी रह़मत से जन्नतुल फ़िरदौस में बग़ैर ह़िसाबो इ़ताब दाख़िल फ़रमाएगा।

न करना ह़श्र में पुरसिश मेरी हो बे सबब बख़्शिश
अ़त़ा कर बाग़े फ़िरदौस अज़ पए शाहे उमम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को अपने आक़ा व मौला मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के करम पर कैसी आस और उम्मीद बन्धी है कि आप लिखते हैं :

है येह उम्मीद रज़ा को तेरी रह़मत से शहा　　**न हो ज़िन्दानिये दोज़ख़ तेरा बन्दा हो कर**

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 70)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : शहा : बादशाह। ज़िन्दानी : क़ैद।

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप के दर का ग़ुलाम हूं और जो आप का ग़ुलाम हो वोह भला कैसे जहन्नम में जाएगा क्यूंकि **अल्लाह** पाक की बारगाह में आप का बड़ा मक़ामो मरतबा और शानो शौकत है तो मुझे इस एज़ाज़ो इकराम में येह उम्मीद है कि मैं जहन्नम में नहीं जाऊंगा बल्कि आप की शफ़ाअ़त से जन्नत में ठिकाना होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

बग़ैर हिसाब दाख़िले जन्नत करने वाले आमाल का बयान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब उन 17 नेक आमाल का बयान किया जाता है जिन के करने वालों के बारे में अह़ादीसे मुबारका में ब ज़बाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िले की ख़ुशख़बरियां सुनाई गई हैं। **अल्लाह** पाक हमें इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ अपनी रिज़ा के मुत़ाबिक़ नेक काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर बिला ह़िसाबो किताब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى الله عليه واٰله وسلّم

﴾1﴿ शाने औलिया (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم)

अल्लाह पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** पाक अगलों पिछलों को एक खुले मैदान में जमअ़ फ़रमाएगा तो एक मुनादी (यानी एलान करने वाला) अ़र्श के नीचे से पुकारेगा : **अल्लाह** करीम की मारिफ़त (यानी पहचान) रखने वाले कहां हैं ? भलाई करने वाले कहां हैं ? लोगों में से एक गिरोह उठेगा और रब्बे करीम के ह़ुज़ूर खड़ा हो जाएगा, **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा ह़ालांकि वोह ख़ूब जानता है : तुम कौन हो ? वोह अ़र्ज़ करेंगे : हम तेरी मारिफ़त रखने वाले हैं, जिन्हें तू ने अपनी मारिफ़त अ़त़ा फ़रमाई और इस क़ाबिल बनाया। **अल्लाह** करीम इरशाद फ़रमाएगा : तुम ने सच कहा। फिर फ़रमाएगा :

तुम पर कुछ पूछ गछ नहीं, मेरी रह़मत से जन्नत में दाख़िल हो जाओ। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रब्बे करीम उन्हें रोज़े क़ियामत की हौलनाकियों से मह़फ़ूज़ रखेगा। (التذکرۃ للقرطبی، ص360)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़ता कर　　तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

﴾2,3﴿ शुहदा और मुआ़फ़ करने वाले

सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब बन्दों को ह़िसाब के लिये खड़ा किया जाएगा तो कुछ लोग अपनी तल्वारें गर्दनों पर रखे हुए आएंगे जिन से ख़ून टपकता होगा, येह लोग जन्नत के दरवाज़े पर भीड़ कर देंगे। पूछा जाएगा : येह कौन लोग हैं ? बताया जाएगा कि येह शुहदा हैं जो ज़िन्दा थे, इन्हें रिज़्क़ दिया जाता था। फिर एक मुनादी (यानी एलान करे वाला) पुकारेगा : जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो और जन्नत में दाख़िल हो जाए। कहा जाएगा : कौन है जिस का अज्र **अल्लाह** करीम के ज़िम्मए करम पर है ? मुनादी कहेगा : लोगों से दरगुज़र करने वाले। मुनादी दोबारा पुकारेगा : जिस का अज्र रब्बे करीम के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो और जन्नत में दाख़िल हो जाए। कोई पूछेगा : कौन है जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है ? मुनादी कहेगा : लोगों से दरगुज़र करने वाले। फिर तीसरी बार निदा देगा : जिस का अज्र **अल्लाह** करीम के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो और जन्नत में दाख़िल हो जाए। तो हज़ारों अफ़राद खड़े होंगे और बग़ैर ह़िसाब किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। (معجم اوسط، 1/542، حدیث:1998) **अल्लाह** पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बाज़ लोगों का मिज़ाज माचिस की तीली की त़रह़ होता है कि ज़रा सी रगड़ पर भड़क उठते हैं। ग़ुस्से के वक़्त इन्सान जज़्बात में आ कर सह़ीह़ व ग़लत़ की तमीज़ (यानी फ़र्क़) भूल जाता है। ग़ुस्से की ह़ालत में किसी पुरसुकून मक़ाम मसलन मक्के मदीने, ख़ानए काबा या सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ का तसव्वुर कीजिये, येह तसव्वुर जितना बढ़ेगा, اِنْ شَآءَاللہ आप का ग़ुस्सा उतना ही कम होता चला जाएगा, ख़्वाह कोई आप को कितना ही सताए, दिल दुखाए, अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लीजिये और इस के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये। काश ! हमारे अन्दर येह जज़्बा पैदा हो जाए कि हम अपनी ज़ात और अपने नफ़्स की ख़ात़िर ग़ुस्सा करना ही छोड़ दें और **अल्लाह** पाक हमें अपनी रह़मत से बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होने वालों में शामिल कर दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का — **तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बेशुमार जुर्म**

(ज़ौक़े नात, स. 18)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾4 ता 6﴿ अल्लाह पाक का हर ह़ाल में शुक्र करने वाले, तहज्जुद गुज़ार और नेक ताजिरों के लिये ख़ुशख़बरी

अपनी उम्मत से प्यार करने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन लोगों को ऐसे खुले और हमवार मैदान में जमअ़ फ़रमाएगा जहां पुकारने वाले की पुकार सब को सुनाई देगी और देखने वाले की निगाह सब तक पहुंचेगी, फिर एक मुनादी खड़ा हो कर पुकारेगा : कहां हैं वोह लोग जो ख़ुशह़ाली और तंगी में **अल्लाह** पाक की ह़म्द (यानी तारीफ़) करते थे ? थोड़े से लोग खड़े होंगे और बग़ैर ह़िसाब किताब जन्नत में दाख़िल हो

जाएंगे। मुनादी फिर पुकारेगा : वोह लोग कहां हैं जिन की करवटें बिस्तरों से जुदा रहती थीं ? फिर थोड़े से लोग खड़े होंगे और येह भी बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। पुकारने वाला फिर पुकारेगा : कहां हैं वोह लोग जिन्हें कोई तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त **अल्लाह** करीम की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती थी ? फिर थोड़े से लोग खड़े होंगे और येह भी बग़ैर हिसाब किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। फिर बक़िय्या सारी मख़्लूक़ खड़ी रहेगी और उन से हिसाब किताब लिया जाएगा। (کتاب الزھد لھناد، ص134، حدیث:176) **अल्लाह** पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

शुक्रे ख़ालिक़ किस तरह से हो अदा　　इक ज़बां और नेमतें बे इन्तिहा

(ज़ौक़े नात, स. 312)

कामयाब ताजिर (Businessman)

जो ताजिर हज़रात काम के दौरान नमाज़ का वक़्त आने पर काम काज छोड़ कर नमाज़ के लिये चल पड़ते हैं और **अल्लाह** पाक की राह में अपनी ज़कात देते हैं उन के बारे में क़ुरआने करीम में इरशाद होता है :

﴿ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِیْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَیْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِیْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۪ۙ ﴾ (پ18، النور:37)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह मर्द जिन को तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त **अल्लाह** के ज़िक्र और नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं करती।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا बाज़ार में थे, मस्जिद में नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई तो आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द कर के मस्जिद में दाख़िल हो गए। येह देख कर आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि आयत "رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِیْهِمْ" ऐसी ही लोगों के हक़ में है।

(تفسیر ابن ابی حاتم، النور، تحت الآیۃ:37، 8/2607)

سُبْحَانَ اللّٰہ ! इन मुक़द्दस हस्तियों के नज़्दीक नमाज़ की अहमिय्यत अ़मली त़ौर पर तिजारत, कारोबार और दुकानदारी से बढ़ कर थी इसी लिये येह इक़ामत की आवाज़ सुनते ही सब कुछ बन्द कर के नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो जाते थे और अब के मुसलमानों का ह़ाल सब को मालूम है कि दुकान के पास मस्जिद होने के बावुजूद जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने के लिये ह़ाज़िर होने के बजाए अपनी दुकानदारी में मसरूफ़ रहते हैं और इस वज्ह से भी नमाज़ के लिये ह़ाज़िर नहीं होते कि दुकान बन्द होने की सूरत में कोई गाहक वापसी चला गया तो नुक़्सान हो जाएगा। **अल्लाह** पाक उन्हें नमाज़ की अहमिय्यत समझने और इसे वक़्त पर जमाअ़त के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : बाज़ उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : अगर तिजारत की मसरूफ़िय्यत की वज्ह से नमाज़ छोड़ेगा तो उस बे नमाज़ी ताजिर को मक्कए मुकर्रमा के बहुत बड़े काफ़िर ताजिर उबय बिन ख़लफ़ के साथ बरोज़े क़ियामत उठाया जाएगा। (كتاب الكبائر، ص21)

उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़ जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़

(वसाइले बख़्शिश, स.713)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾7 ता 9﴿ दरगुज़र करने वालों और साबिरीन का इन्आ़म

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब रब्बे करीम मख़्लूक़ को बरोजे क़ियामत जमअ़ फ़रमाएगा तो एक मुनादी पुकारेगा : फ़ज़्ल वाले कहां हैं ? कुछ लोग खड़े होंगे और वोह बहुत थोड़े होंगे, वोह तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ चल पड़ेंगे, फ़रिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करते हुए कहेंगे : हम तुम्हें जन्नत की त़रफ़ तेज़ी से जाते देख रहे हैं, तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम फ़ज़्ल वाले हैं। फ़रिश्ते पूछेंगे : तुम्हारा फ़ज़्ल क्या था ? तो वोह कहेंगे : जब हम पर ज़ुल्म किया

जाता था तो हम सब्र करते थे और जब हमारे साथ कोई बुराई से पेश आता था तो हम दरगुज़र से काम लेते थे और जब हम से जाहिलाना सुलूक किया जाता था तो हम बरदाश्त से काम लेते थे। उन से कहा जाएगा : जन्नत में दाख़िल हो जाओ ! अ़मल करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है। फिर एक मुनादी पुकारेगा : साबिरीन कहां हैं ? कुछ लोग खड़े होंगे जो बहुत थोड़े होंगे, वोह तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ चल देंगे, फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करते हुए कहेंगे : हम तुम्हें तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ जाते देख रहे हैं, तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम सब्र वाले हैं। फ़िरिश्ते पूछेंगे : तुम्हारा सब्र क्या था ? वोह कहेंगे : हम **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त पर और उस की नाफ़रमानियों से सब्र करते थे (यानी इत़ाअ़त पर क़ाइम रहते और नाफ़रमानियों से बचते थे)। उन से कहा जाएगा : जन्नत में दाख़िल हो जाओ ! अ़मल करने वालों का क्या ही अच्छा सिला है।

अल्लाह पाक की ख़ात़िर मह़ब्बत करने वाले

फिर एक मुनादी पुकारेगा : **अल्लाह** करीम के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले कहां हैं ? फिर थोड़े से लोग खड़े होंगे, वोह भी तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ चल पड़ेंगे, फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करते हुए कहेंगे : हम तुम्हें तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ जाते देख रहे हैं, तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम रब्बे करीम के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करते थे। फ़िरिश्ते कहेंगे तुम्हारी एक दूसरे से मह़ब्बत कैसी थी ? तो वोह कहेंगे : हम एक दूसरे से **अल्लाह** पाक ही के लिये मह़ब्बत करते थे, उसी की ख़ात़िर मुलाक़ात करते थे, उसी की ख़ात़िर एक दूसरे से नर्मी से पेश आते थे और उसी के लिये एक दूसरे पर ख़र्च करते थे। फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : जन्नत में दाख़िल हो जाओ ! अ़मल करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** करीम उन के जन्नत में दाख़िल होने के बाद ह़िसाब किताब के लिये मीज़ान रखेगा। (المطالب العالیۃ، 18/617،حدیث:4588)

बे हिसाब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब

(ज़ौक़े नात, स. 84)

जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दी (वाक़िआ़)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं कि एक बीमार ख़ातून (जिन पर जुनून की कैफ़िय्यत त़ारी होती थी) बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हुई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे ह़क़ में दुआ़ फ़रमा दें। इरशाद फ़रमाया : अगर तू चाहे तो मैं तेरे लिये रब्बे करीम के हुज़ूर दुआ़ करूं कि वोह तुझे शिफ़ा दे और अगर चाहे तो सब्र कर और तुझ से ह़िसाब न होगा। येह सुन कर उस ने अ़र्ज़ की : मैं सब्र करूंगी, मुझ से कुछ ह़िसाब किताब न लिया जाए।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،4/248،حدیث:2698)

﴾10﴿ नाबीनाओं के लिये ख़ुशख़बरी

अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें बताने वाले प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दीन जाने के बाद सब से बड़ी आज़्माइश जिस में बन्दे को मुब्तला किया जाए वोह बीनाई का जाना है पस जिस ने सब्र किया यहां तक कि उसी ह़ालत में **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात का शरफ़ पाया तो उस पर कोई ह़िसाब नहीं होगा। (مُسندِ بزّار،10/244،حدیث:4342)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बाज़ रिवायात में एक आंख की बीनाई ख़त्म होने पर भी येह फ़ज़ीलत आई है। आंखों का ख़ास त़ौर पर इस लिये ज़िक्र किया गया कि इन्सान को अपने ह़वास में से उन दोनों से ज़ियादा और कोई चीज़ मह़बूब नहीं होती। ह़िब्रुल उम्मह, (यानी उम्मत के बहुत बड़े आ़लिम) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जब नाबीना हो गए तो येह शेर पढ़ा करते थे :

اِنْ يُّذْهِبِ اللهُ مِنْ عَيْنَیَّ نُوْرَ هُمَا فَفِیْ لِسَانِیْ وَقَلْبِی لِلْهُدٰی نُوْرٌ

तर्जमा : अगर **अल्लाह** पाक मेरी आंखों का नूर ले गया तो क्या हुवा ? मेरी ज़बान और दिल में तो हिदायत का नूर है। (مرقاۃ المفاتیح، 4/28، تحت الحدیث:1549)

आंखें चली जाना नाराज़ी का सबब नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन ख़लफ़ इब्ने बत़्त़ाल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : दुनिया में किसी मुसलमान का नाबीना हो जाना **अल्लाह** पाक की इस पर नाराज़ी की वज्ह से नहीं बल्कि उस के साथ **अल्लाह** पाक भलाई का इरादा फ़रमाता है। या तो उस से किसी ऐसी बुरी चीज़ को दूर कर देता है जिस का सबब उस की आंखें बनतीं और आख़िरत में ऐसा अ़ज़ाब मिलता कि उस पर सब्र न हो सकता या उस के ऐसे साबिक़ा गुनाहों को मिटा देता है कि जिस्म के किसी बहुत ही अहम ह़िस्से का तलफ़ ही दुनिया में उस का इ़वज़ हो सकता है ताकि बरोज़े क़ियामत वोह गुनाहों से पाक हो कर अपने रब्बे करीम से मुलाक़ात करे, या फिर उस मुसीबत के ज़रीए वोह अज्र के इस दर्जे तक पहुंच जाता है कि जिस तक वोह अपने आमाल के ज़रीए नहीं पहुंच सकता था। दीगर तमाम मुसीबतों का मुआ़मला भी इसी त़रह़ है। पस जो आंखें चली जाने या किसी और उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने की मुसीबत में मुब्तला किया गया तो उसे चाहिये कि उस मुसीबत को सब्रो शुक्र और सवाब की उम्मीद के साथ क़बूल करे और **अल्लाह** पाक की जानिब से लिये जाने वाले इम्तिह़ान पर राज़ी रहे क्यूंकि इस मुसीबत के बदले उसे बहुत अच्छा और बहुत अ़ज़ीम बदला मिलेगा और वोह जन्नत है। (شرح صحیح بخاری لابن بطال، 9/377)

ग़ैब की ख़बर

ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ बयान करते हैं कि **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : इस मरज़

में कुछ तक्लीफ़ ज़रूर है लेकिन येह तुम्हें नुक़्सान नहीं देगा, मगर उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब मेरे दुनिया से पर्दा फ़रमाने के बाद तुम उ़म्र पाओगे और तुम्हारी बीनाई जाती रहेगी ? मैं ने अ़र्ज़ की : सवाब की उम्मीद रखते हुए मैं सब्र से काम लूंगा । इरशाद फ़रमाया : "तब तो तुम बग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होगे ।" चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल फ़रमाने के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ नाबीना हो गए। (معجم کبیر،5/211،حدیث:5126ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने परवरदिगार की अ़ता से अपने ग़ुलामों की उ़म्रों से भी बा ख़बर हैं और उन के साथ जो कुछ पेश होने वाला है उसे भी जानते हैं। क़ुरआने पाक की बेशुमार आयाते मुबारका से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब का सुबूत मिलता है। यहां सिर्फ़ एक आयते करीमा पेश की जाती है चुनान्चे पारह 30 सूरतुत्तक्वीर की आयत नम्बर 24 में इरशादे ख़ुदावन्दी है : ﴿وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और येह नबी ग़ैब बताने पर हरगिज़ बख़ील नहीं।

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मल्कूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109)

﴾11﴿ सफ़रे ह़ज व उ़मरह में इन्तिक़ाल की फ़ज़ीलत

तमाम मुसलमानों की अम्मीजान, ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا बयान करती हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : जो ह़ज या उ़मरे के लिये निकला और रास्ते में फ़ौत हो गया तो उस की पेशी नहीं होगी और न ही ह़िसाब होगा और उस से फ़रमाया जाएगा : जन्नत में दाख़िल हो जा। (معجم اوسط،4/111،حدیث:5388)

तैबा में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश,स. 222)

﴾12﴿ क़नाअ़त करने वाले का इन्अ़ाम

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़िसाब किताब की शिद्दत से वोह भूका शख़्स दोचार न होगा जिस ने अज्रो सवाब की उम्मीद पर भूक बरदाश्त की होगी। (तारीख़े मदीना दिमश्क़, 6/278)

क़लील रोज़ी पे दो क़नाअ़त फ़ुज़ूल गोई से दे दो नफ़रत

दुरूद पढ़ता रहूं ब कसरत नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

(वसाइले बख़्शिस, स. 208)

﴾13, ता 15﴿ त़ालिबे इ़ल्म, फ़रमां बरदार बीवी और औलाद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना हर मुसलमान पर ह़स्बे ह़ाल ज़रूरी है और नेक फ़रमांबरदार ज़ौजा **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से अ़ज़ीम तोह़फ़ा है और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने वाली औलाद की भी क्या ही बात है ह़दीसे पाक में है : त़ालिबे इ़ल्म, फ़रमां बरदार बीवी और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने वाली औलाद अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में बग़ैर ह़िसाब दाख़िल होगी। (کنز العمال، جز:9، 5/69، حدیث:28824)

﴾16﴿ मुसलमान की ह़ाजत रवाई की फ़ज़ीलत

मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने मुसलमान भाई की ज़रूरत पूरी करने के लिये चलता है, **अल्लाह** पाक उस के हर क़दम के बदले 70 नेकियां लिखता है, अगर ज़रूरत पूरी हो गई तो ज़रूरत पूरी करने वाला शख़्स गुनाहों से यूं पाक हो जाएगा जैसा कि उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था और अगर ज़रूरत पूरी करने के दौरान इन्तिक़ाल कर जाए तो बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होगा। (مُسند اَبی یعلٰی، 3/16، حدیث:2781)

मचला है कि रह़मत ने उम्मीद बन्धाई है क्या बात तेरी मुजरिम क्या बात बनाई है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 192)

﴾17﴿ औलाद की अच्छी तरबियत करने वाले के लिये ख़ुशख़बरी

तमाम मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا बयान करती हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी बच्चे की परवरिश की ह़त्ताकि वोह "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ" कहने लगे (यानी तौह़ीदो रिसालत की गवाही देने लगे) तो रब्बे करीम इस तरबियत करने वाले का ह़िसाब नहीं लेगा। (معجم اوسط، 3/370، حدیث:4865)

शर्हे ह़दीस : इस अ़मल के सिले में उसे बग़ैर किसी ह़िसाब के जन्नत में भेज दिया जाएगा, नीज़ "ह़िसाब न होने" से येह भी मुराद हो सकता है कि उस का ह़िसाब आसान होगा और सलामती पर इख़्तिताम पज़ीर होगा, चुनान्चे ह़िसाब में कोई नुक़्सान व मशक़्क़त न होने के बाइ़स उसे मुबालग़तन "बिला ह़िसाब" के लफ़्ज़ों से बयान फ़रमा दिया गया। (فیض القدیر، 1/174، تحت الحدیث:8696)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! औलाद की सह़ीह़ तरबियत करना वालिदैन की ज़िम्मेदारी है उ़मूमन देखा जाता है कि वालिदैन बच्चे की तरबियत का सह़ीह़ ह़क़ अदा नहीं करते और बचपन में अच्छे बुरे की तमीज़ नहीं सिखाते, जब वोही औलाद बड़ी हो जाती है तो ऐसे वालिदैन अपनी औलाद की नाफ़रमानी का रोना रोते नज़र आते हैं। मां बाप को चाहिये कि बचपन ही से अपनी औलाद की तरबियत शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ करें। बच्चा समझ कर उन्हें छूट न दें और न येह कह कर उन की तरबियत को नज़र अन्दाज़ करें कि अभी तो बच्चा है जब बड़ा होगा तो ख़ुद समझ जाएगा। जो अपनी औलाद की तरबियत पर ख़ातिर ख़्वाह

तवज्जोह नहीं देते, उन से दुन्यिावी तालीम के बारे में तो पूछ गछ करते हैं मगर औलाद नमाज़ पढ़े न पढ़े उस की बिल्कुल परवा नहीं करते, तो याद रखिये ! येही लोग बाद में अफ़्सोस कर रहे होते हैं। तरबियते औलाद सिर्फ़ इस चीज़ का नाम नहीं कि उन्हें दुन्यवी तालीम दिलवा दी जाए और उन के लिये खाने, पहनने वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर दिया जाए बल्कि उन को **अल्लाह** पाक और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमांबरदार बनाने की कोशिश करना भी वालिदैन की ज़िम्मेदारियों में शामिल है।

औलाद के बारे में पूछा जाएगा

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करो क्यूंकि तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा कि तुम ने उस की कैसी तरबियत की और तुम ने उसे क्या सिखाया ?

(شعب الایمان،6/400،حدیث:8662ملخصًا)

या रब बचा ले तू मुझे नारे जहीम से　　औलाद पर भी बल्कि जहन्नम ह़राम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 310)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मकतबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025